तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च ।

फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्ना इव ।।20।।

अन्वयः- संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेंगितस्य च तस्य प्रारम्भाः प्राक्नाः संस्काराः इव फलानुमेयाः (बभूवुः)।

अनुवादः- सब प्रकार के मंत्रों (विचारणाओं) को गुप्त (संवृत) रखने वाले तथा (भंवे तरेरना, मुख लालिमा आदि क्रोध, हर्ष आदि के सूचक) बाह्य शारीरिक चिन्हों तथा हृदयंगत आंतरिक भावों को भी छिपा लेने वाला राजा दिलीप के (समस्त राजनीतिक सामादि) उपाय पूर्वजन्म के संस्कारों के समान फल (परिणाम) से ही जाने जाते थे। (जैसे फलों को ही देखकर मनुष्य के पूर्वजन्म के संस्कारों का अनुमान लगाया जाता है कि पहले अच्छे व बुरे कार्य किये होंगे वैसे ही जब दिलीप के साम-दान-दंड-भेद आदि उपाय सफल हो जाते थे तभी लोगों को ज्ञात होता था कि राजा ने इन उपायों को पहले आरम्भ किया होगा।)

टिप्पणियां

सफलता के लिए राज-मंत्र या राजनीति का नितान्त गुप्त रहना अत्यन्त आवश्यक है। राजा को इतना कुशल होना चाहिये कि उसकी मुखमुद्रा, आकार-प्रकार आदि देखकर भी लोग उसके मन के गुप्त के भाव को समझ न सकें। जो बात उसके मन में है वह सदा गुप्त ही रहनी चाहिये, किसी प्रकार भी प्रकट नहीं होनी चाहिये। केवल कार्यसिद्ध हो जाने पर ही वह प्रकट होनी चाहिये, उससे पूर्व नहीं। राजा दिलीप मंत्र-रक्षा में कुशल थे। अतएव कार्यसिद्ध हो जाने पर ही लोगों को उनकी नीतियों का भेद पता चलता था, उससे पूर्व नहीं। इसी प्रकार का विचार भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य

में ही व्यक्त हुआ है: ''महोदयैस्तस्य हितानुबन्धिभिः, प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः।'' (किरातार्जुनीयम् 1.20)

संवृतमन्त्रस्य संवृतः मन्त्रः येन सः संवृतमन्त्र (बहुव्रीहि)। जिसकी नीतियां या मन्त्रणाएं सदा गुप्त रहती थीं

गूढ़ाकारेङ्गितस्य 'आकारश्च इङ्गितश्च आकारेङ्गिते (द्वन्द) गूढ़े आकारेङ्गिते यस्य सः (बहुव्रीहि) तस्य।' जिसके शोक आदि के सूचक मुख-विकार तथा चेष्टाओं और मन के भाव नहीं जाने जा सकते थे। गूढ़-गुप्त, आकार- शारीरिक मुख-विकार, बाह्य चेष्टाएं- इंगित भाव चेष्टाएं।

संस्काराः हिन्दू पूर्वजन्म में विश्वास करते हैं। प्रत्येक वर्तमान जन्म पूर्व (पिछले) जन्म में किये कर्मों का फल है। वर्तमान जन्म में मनुष्य जो कुछ अच्छा या बुरा भोगता है वह सब उसके पूर्वजन्म के अच्छे या बुरे कर्मों का फल है। यदि उसने पूर्वजन्म के अच्छे कर्म किये हैं तो इस जन्म से उसे उसके अनुसार सुख मिलता है। यदि बुरे कर्म हैं तो तदनुसार उसे दुःख मिलता है। यद्यपि किसी को पूर्वजन्म में किये गये कर्मों का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता, तथापि वर्तमान जन्म में भोगे जा रहे सुख-दुःख के परिणाम से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अमुक व्यक्ति ने पूर्वजन्म में अच्छे कर्म किये होंगे या बुरे। इसी प्रकार महाराजा दिलीप की नीतियों का, जब तक वे गुप्त रहती थी, किसी को उनका कुछ भी ज्ञान नहीं होता था परन्तु उनकी सफलता को देखकर ही पता चलता था कि दिलीप ने अमुक समय में इस नीति को आरम्भ किया होगा।

फलानुमेयाः 'प्रारम्भाः' का विशेषण। वे कर्म जिसका अनुमान उनके फल से ही लगता है इसके बिना नहीं।

प्रारम्भाः उपाय, उद्योग।